The Arctic region is of keen importance for India both in terms of environment and strategically. Discuss. (250 words)

The Arctic also known as Earth's last frontier, has become a piece of global interest recenlty due to its strategic and environmental implications. The Arctic region holds a special place not just from an environmental perspective but also for its strategic and economic prospects for India.

Environmental Significance of Arctic for India

- **Global Climate Regulator:** Arctic sea ice reflects solar radiation, influencing global temperatures and ocean currents.
- **Link with Himalayas:** Arctic melting offers insights into Himalayan glacial behavior, crucial for freshwater management in the 'third pole'.

Economic Significance of Arctic for India

- **Resource Reserves:** Arctic holds over 40% of global oil and gas reserves; also rich in coal, gypsum, diamonds, zinc, lead, and other minerals, aiding India's energy security.
- **Northern Sea Route (NSR):** NSR shortens shipping distance by up to 50% compared to Suez/Panama Canals; India handled 35% of 8 million tonnes cargo at Murmansk port in 2023, reflecting rising engagement.

Strategic Significance of Arctic for India

- **Historical Engagement:** India signed the Svalbard Treaty in 1920; observer in Arctic Council since 2013; involved in polar research.
- **Geopolitical Balance:** Chennai-Vladivostok Maritime Corridor (CVMC) and growing NSR activity enhance India-Russia ties and help counterbalance China-Russia influence in the Arctic.

The Arctic region has an immense strategic, economic, and environmental significance, and also plays a pivotal role in shaping India's global engagements. Hence, it is imperative for India to further its commitments, collaborations, and responsible actions in the region, ensuring a balance between economic interests and environmental sustainability.

आर्कटिक क्षेत्र भारत के लिए पर्यावरण और रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। चर्चा करें। (250 शब्द)

आर्कटिक, जिसे पृथ्वी की अंतिम सीमा के रूप में भी जाना जाता है , अपने सामरिक और पर्यावरणीय निहितार्थों के कारण हाल में वैश्विक रुचि का विषय बन गया है। आर्कटिक क्षेत्र न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बल्कि भारत के लिए अपनी सामरिक और आर्थिक संभावनाओं हेतु भी एक विशेष स्थान रखता है।

भारत हेतु आर्कटिक का पर्यावरणीय महत्व

- **वैश्विक जलवायु नियामक:** आर्कटिक समुद्री बर्फ सौर विकिरण परावर्तित करती है , जो वैश्विक तापमान और महासागरीय धाराओं को प्रभावित करती है।
- **हिमालय से संबंध:** आर्कटिक बर्फ के पिघलने से हिमालयी हिमनदों के पिघलान की भी जानकारी मिलती है, जो 'तृतीय ध्रुव' में मीठे पानी के प्रबंधन हेतु महत्वपूर्ण है।

भारत हेतु आर्कटिक का आर्थिक महत्व

- **संसाधन भंडार:** आर्कटिक में वैश्विक तेल और गैस भंडार का 40% से अधिक हिस्सा संगृहीत है; यह कोयला, जिप्सम, हीरा, जस्ता, सीसा और अन्य खनिजों से भी समृद्ध है , जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा में सहायक है।
- **उत्तरी समुद्री मार्ग (NSR):** स्वेज/पनामा नहरों की तुलना में NSR शिपिंग दूरी को 50% तक कम करता है; भारत ने 2023 में मरमंस्क बंदरगाह पर 8 मिलियन टन कार्गो का 35% विनियमित किया, जो बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।

भारत हेतु आर्कटिक का सामरिक महत्व

- **ऐतिहासिक जुड़ाव:** भारत ने 1920 में स्वालबार्ड संधि पर हस्ताक्षर किए; 2013 से आर्कटिक परिषद में पर्यवेक्षक; ध्रुवीय अनुसंधान में शामिल।
- **भू-राजनीतिक संतुलन:** चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारे (CVMC) एवं **NSR** में बढ़ती गतिविधि भारत-रूस संबंधों को सुदृद करती है और आर्कटिक में चीन-रूस प्रभाव संतुलित करने में मदद करती है।

आर्कटिक क्षेत्र का रणनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय महत्व अधिक है और यह भारत की वैश्विक भागीदारी को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, भारत हेतु इस क्षेत्र में अपनी प्रतिबद्धताओं, सहयोगों और जिम्मेदार कार्यों को आगे बढ़ाना अत्यावश्यक है, ताकि आर्थिक हितों एवं पर्यावरणीय स्थिरता के मध्य संतुलन सुनिश्चित हो सके।